हिंदू मंदिर :

सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था की धुरी

Shri Ajit Tiwary (Kautilya International Foundation)

SHASHWAT BHARATAM

भारतीय सभ्यता में समाज व्यवस्था के अंतर्गत मंदिर सदा ही एक महत्वपूर्ण स्तम्भ रहे हैं | भारतीय सामाजिक व्यवस्था में मंदिर एक ऐसी संस्थागत व्यवस्था रहे हैं जिनकी भारतीय समाज के नियमित और सुचारू रूप से संचालन में एक बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका रही है | भारतीय मंदिर ज्ञान-विज्ञान, कला-संस्कृति के साथ-साथ महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र भी रहे हैं | भारतीय अर्थव्यवस्था में मंदिरों की एक बड़ी भूमिका रही है | प्रमुख आर्थिक केंद्र होने के कारण मंदिर अकूत धन सम्पदा के स्वामी भी रहे हैं | प्रसिद्ध विद्वान् ऍम जी अस नारायणन और केशव वेलुठाट के शोध-पत्र अनुसार दक्षिण भारतीय मंदिर स्वर्ण, रजत तथा अन्य बहुमूल्य धातुओं के गोदाम बन चुके थे |

भारतीय परंपरा में जैसा की हमने चर्चा भी किया है की मंदिर धार्मिक तथा सामाजिक गतिविधियों, ज्ञान-विज्ञान, कला-संस्कृति आदि के साथ-साथ प्रमुख आर्थिक केंद्र रहे हैं तथा अर्थव्यवस्था में में उनकी एक बड़ी और स्पष्ट भूमिका रही है.

भारतीय मंदिरों की प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ

स्थानीय स्तर पर भारतीय मंदिर बैंक की भूमिका निभाते थे |एक ओर आधुनिक बैंकों के जैसे ही मंदिर व्यापारियों तथा सामान्य जनों से जमा ग्रहण करते थे | और जमा राशि पर 12% की दर से जमाकर्ताओं को ब्याज देते थे | लोग अपनी बहुमूल्य वस्तुएं तथा पैसा मंदिरों में जमा करते थे | मंदिरों के प्रति जनमानस में अगाध निष्ठा, इनकी आर्थिक सम्पन्नता, जमा राशि पर उचित ब्याज दर तथा मंदिर के न्यासियों के द्वारा अपनी भूमिका के समुचित निर्वहन के कारण अपनी जमा-पूंजी को यहाँ सबसे सुरक्षित समझते थे |

अधिकतर राज्य का कोष भी मंदिरों में ही रखा जाता था |

तो दूसरी ओर आवश्यकता पड़ने पर इच्छुक व्यक्तियों और संस्थाओं को समय-समय पर अनेक प्रकार के ऋण भी प्रदान करते थे| मंदिर कृषि विकाश, सिचाई योजनाओं के लिए, पशुपालन, बागवानी तथा व्यापार के लिए व्यापारिक श्रेणियों, ग्राम सभा तथा सामान्य व्यक्ति को आवस्यकतानुसार अलग-अलग निर्धारित ब्याज की स्थितियों पर ऋण देते थे | ब्याज के रूप में लोगों या संस्थाओं से अपने दैनिक धार्मिक कार्यों के निमित सामग्री जैसे: तेल,घी प्रसाद की सामग्री तथा अन्य पूजा सामग्री तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं लेते थे | पशुपालन के लिए दी गई ऋण पर ब्याज के रूप में दूध, घी आदि पदार्थ तथा कृषि और बागवानी के लिए प्रदान की गई ऋण पर उनके उत्पाद का कुछ भाग ब्याज के रूप में ले लेते थे | इसके अतिरिक्त व्यापार के लिए दी गई राशि पर निर्धारित दर के अनुसार स्वर्ण या मुद्राओं में भी ब्याज लेते थे|

स्वर्ण के रूप में या अन्य प्रचलित मुद्रा के रूप में व्यापारिक या व्यक्तिगत ऋण पर ब्याज की दर 12.5 से लेकर 15 प्रतिशत तक होती थी | परन्तु धन के बदले अनाज की स्थिति में ऋण की दर 25 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत की वार्षिक दर होती थी |
मंदिर ऋण के बदले बंधक के रूप में भूमि अपने पास रखते थे, तथा आवश्यकता पड़ने पर ऋण लेने के लिए मंदिर दान में मिली हुई भूमि को ग्राम सभा या व्यापारियों के पास बंधक रखते थे | मंदिर उत्पादक-अनुत्पादक सभी प्रकार के कार्य के लिए ऋण उपलब्ध कराते थे | मंदिर न केवल व्यापारियों को बड़ी मात्रा में ऋण प्रदान करते थे बल्कि सार्थवाहों को भी अनेक प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराते थे

भारतीय मंदिर बड़े स्तर पर रोजगार प्रदान करने वाले संस्था होते थे | मंदिर मुख्यतया दो स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराते थे, पहला, मंदिरों द्वारा किये जाने वाले धार्मिक गतिविधियों के लिए और दूसरा मंदिरों द्वारा संचालित विद्यालयों तथा अन्य सामाजिक कार्यों के लिए | 11वी सदी के एक अभिलेख के अनुसार तंजौर मंदिर में शिक्षकों और पुजारियों के अतिरिक्त 609 कर्मचारी कार्यरत थे |

एक अन्य अभिलेख के अनुसार विजय नगर साम्राज्य में अपेक्षाकृत एक छोटे मंदिर में 370 कर्मचारी कार्यरत थे | मंदिरों में पुजारियों और शिक्षकों के अतिरिक्त राजमिस्त्री, गाड़ीवान, लोहार, बढई, मालाकार, तथा रसोइयों के जुड़े रहने के अनेक प्रमाण मिलते है| सहस्रबाहु मंदिर से प्राप्त अभिलेख भी बड़े स्तर पर अभियंताओं, लकड़ी के काम करने वाले तथा अनेक लोगों के कार्यरत रहने की बात करते हैं | बड़े मंदिरों में लेखाकार तथा राजकीय पर्यवेक्षक भी होते थे| अनेक शोधकर्ताओं ने भी अलग-अलग समय पर अपने शोधकार्यों के माध्यम से भारतीय मंदिरों को प्रमुख नियोक्ता के रूप में स्थापित किया है|

वेतन के तौर पर अलग-अलग कार्य श्रेणी और कुशलता के अनुसार सामान्यतः मंदिर के ओर से भूमि प्रदान की जाती थी | चोल अभिलेखों में वेतन का भुगतान मुद्रा के रूप में करने का भी व्यापक उल्लेख है | इसके अतिरिक्त अनाज के द्वारा भी भुगतान किया जाता था | दैनिक मजदूरों को सामान्यतः अनाज से ही भुगतान किया जाता था |

मंदिरों की आर्थिक व्यवस्था

मंदिरों की आर्थिक क्रियाएं एक समिति "गोष्ठी" द्वारा नियंत्रित होती थी | इसके सदस्यों को गोष्ठिक कहते थे | ये अत्यंत सम्मानित और समृद्ध वर्ग के लोग होते थे जिनके अन्दर कोई लालच नहीं होता था | इनकी संख्या मंदिरों की स्थिति के अनुसार अलग-अलग थी जो सामान्यतया आठ के लगभग होती थी | इनका प्रमुख कार्य राजस्व को व्यवस्थित रखना था | कभी-कभी ये मंदिर के संपत्ति के लिए न्यास का कार्य भी करते थे | कुछ अभिलेखों में इनके लिए 'अहार' शब्द का भी उल्लेख है | कही-कही पुरोहितों के संघ द्वारा भी मंदिरों का संचालन होता था | मंदिरों के पास दान में प्राप्त बहुत अधिक भूमि होती थी | इसमें मंदिर की भूमिका भ-स्वामी की होती थी जिसका मुख्य मंदिर का प्रधान देवता होता था | मंदिर के संचालन के लिए पुजारियों को रहने तथा कृषि के लिए करमुक्त भूमि दी जाती थी |

भारत में स्वर्ण दान देने का बड़ा महत्त्व होता है और इसी परंपरा के तहत आज भी लोग मंदिरों में अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वर्ण दान करते हैं | वर्ल्ड गोल्ड कौंसिल के अनुसार भारतीय मंदिरों में लगभग 4000 टन सोना जमा है |

विश्व के सर्वाधिक स्वर्ण भण्डार वाले देशों की सूचि के अनुसार अमेरिका सर्वाधिक स्वर्ण भण्डार के साथ पहले नंबर पर आता है जिसका स्वर्ण भण्डार 8000 टन का है इसके बाद जर्मनी और इटली का स्थान आता है जिनका स्वर्ण भण्डार क्रमशः 3381 टन और 2451.8 टन है | भारत का स्वर्ण भण्डार 560 टन के आस-पास है | ये आंकड़े भी भारतीय मंदिरों की समृद्धि बताने के लिए पर्याप्त हैं जिनके अनुसार संस्थागत रूप से अमेरिका बाद भारतीय मंदिरों का वर्तमान स्वर्ण भण्डार सबसे ज्यादा है |